Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.05.02.15
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575
Crossref DOI Prefix 10.46523

हिन्दी उपन्यास में बदलते पारिवारिक मूल्य और स्त्री संघर्ष

डॉ० अर्चना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शिया पी० जी० कॉलेज, लखनऊ

यह महज संयोग नही है कि हिन्दी उपन्यास अपने आरम्भिक दौर से नारी जीवन एवं नारी समस्याओं को लेकर बेहद संवेदनशील रहा है। आरम्भिक दौर के उपन्यासों में 'भाग्यवती, देवरानी जेठानी आदि में नारी चरित्र उपन्यास के केन्द्र में रहे है दरअसल हिन्दी में आधुनिक विधा के रूप में जब उपन्यास लेखन प्रारम्भहोता है वह भारत में धार्मिक सामाजिक पुर्नजागरण का काल है जिसमें समाज में व्याप्त कुरितियों पर तार्किक रूप से प्रहार कर एक आदर्श समाज के निर्माण का प्रयास किया जा रहा था। तत्तकालीन सांमती समाज में व्याप्त कुरितियों का सबसे अधिक शिकार नारी ही थी अतः रचनाकार जो नये सुधारों के आवाहन से प्रभावित थे उन्होनें स्त्री संवेदना को केन्द्र में रखकर रचनायें लिखी। परवर्ती कालों में भी स्त्री केन्द्रित रचनायें उपन्यासों का मुख्य स्वर बना रहा है।

शुरूआती दौर में समाज के मूल्यों के निर्वहन की मूल इकाई परिवार थी जो आज के दौर तक आते आते व्यक्ति पर टिक गयी है। स्त्री जीवन पैदा होने से मृत्यु तक परिवार के प्रागढ़ में ही हर सुख दुख जीती रही है। एक तरह से देखे तो हमारे समाज में स्त्री जीवन एव परिवार एक दूसरे के पर्याय रहे है अतः उपन्यासों में भी परिवार एवं पारिवारिक मूल्यों के साथ स्त्री के रिश्तों को मूल संवेदना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार हिन्दी उपन्यास की अब तक की यात्रा में बदलती परिस्थितियों के साथ बदलते परिवारिक मूल्यों व उसी बदलाव के क्रम में स्त्री संघर्ष के स्वरूप में आने वाले बदलावों का अध्ययन प्रासंगिक है।

महिला उपन्यासकारों के साथ साथ पुरुष उपन्यासकारों ने भी नारी समस्या एवं नारी के विबिन्न रूपों का अपने उपन्यासों के केंद्र में रखा है। पश्चिमी सभ्यता के संपर्क के परिणामस्वरूप और विभिन्न भारतीय सामाजिक आंदोलनों के कारण राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण बदल रहा था। इस बदले हुए नवीन दृष्टिकोण को लेकर आधुनिक साहित्य का भी विकास हुआ। उपन्यास का यह प्रारम्भिक काल था।

प्रेमचन्द ने 'निर्मला और 'सेवासदन' के माध्यम से पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने चंद हसीनों के खुतूत और बुधुआ की बेटी तथा प्रसाद ने कंकाल और तितली के माध्यम से पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों की अमानवीय स्थिति को अपने उपन्यास का विषय बनाया। लेकिन, इन सभी रचनाओं में स्त्रियों के प्रति सहानुभूति का स्वर ही मौजूद रहा। उस व्यवस्था को बदलने के बुनियादी स्तर पर इन उपन्यासों में संकेत नहीं मिलते, जिन्होनें स्त्रियों को इस स्थिति तक पहुंचाया है। हाँ, गोदान में इसके क्षणिक संकेत मिलते है। मेहता, को इस स्थिति तक पहुंचाया है। हाँ, गोदान में इसके

Received: 05.06.2022 **Accepted:** 24.07.2022 **Published**: 25.07.2022

क्षणिक सकते मिलते है। मेहता के साथ बातचीत मेहता के क्रम में मिसेज खन्ना कहती है- में केवल माता ही तो नहीं. मैं एक नारी भी हूँ एवं एक नारी के रूप में मुझे भी कुछ चाहिए। इसके जबाव में मेहता कहते है-नारी केवल माता है। इसके उपरान्त वह जो कुछ है, वह मातृत्व का उपक्रम मात्र है। नारीत्व एवं मातृत्व के इस बंद्ध की परिणाति मातृत्व की प्रतिष्ठा के रूप में होती है और मिसेज खन्ना वापस अपने घर लौट जाती है। लेकिन, यह अंश इतना विरल है कि गोदान के प्रवाह में अधिकांश पाठक इसे नोटिस में नहीं ले पाते। आगे चलकर नारीत्व और मातृत्व का यही बंद्ध यशपाल

की दिव्या का मुख्य प्रतिपाद्य बनकर आता है लेकिन इस बीच हिंन्दी उपन्यास नारी-विमर्श का एक लम्बा रास्ता तय कर चुका होता है।

पहली बार जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों के जरिए नारी की स्वत्रंता, सम्मान और स्वतत्व के प्रश्न को उठाया। इस क्रम में उन्होनें उस पारम्परिक व्यवस्था को कठघरे में लाकर खड़ा किया जिसने स्त्रियों को पुरूषों का अधीनस्थ बनाया। इस प्रकार जैनेन्द्र स्त्री को पुरूष के समानांतर खड़ा करते है। चाहे 'परख की कट्टो हो. या फिर त्यागपत्र की मृणाल या 'सुनीता की सुनीता, तीनों ही संदर्भों में जैनेन्द्र की नारी-चेतना को अक्सर आधुनिक चेतना से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन इस दौर में लिखे गये उपन्यासों में अन्ततः स्त्रियों के लिए ततशुदा सरहदें ही खिंची रहीं। उनके लिए बाहर की दुनिया जैसे वर्जित ही रही और न ही वे उस स्वतत्व एवं अस्मिता को प्राप्त कर पाई जिसे पाना उनका लक्ष्य रहा।

"शेखर एक जीवनी' अज्ञेय का प्रथम उपन्यास है, जिसके दो भाग है इसमे शशि का चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। 'शेखर के व्यक्तित्व में वेदना और प्रेम का मुख्य सर्जक चरित्र है शशि- सबसे पहले तुम शशि ।"

अज्ञेय के 'नदी के द्वीप की रेखा प्रखर, तेजस्वी अति बौद्धिक उच्च शिक्षित और सक्रिय नारी चरित्र है। वह सही अर्थो में आधुनिक नारी है ट सबल, समर्थ, सतुलित और संकल्पयुक्त।

सुरेन्द्र वर्मा के मुझे चाँद चाहिए में एक कस्बे की लड़की एन.एस डी. में प्रवेश पाती है और अभिनेत्री बनती है।

जैनेन्द्र का दशार्क स्त्री की सशक्तता का समर्थन करता है। 'त्यागपत्र की मृणाल जहां आत्मपीड़न की शिकार है वहीं दशार्क की रंजना टूटती नहीं है अपना रास्ता स्वयं बनाती है।

मनोहरश्याम जोशी के 'हमजाद' में दिखाया गया है कि बाजारवाद के इस युग में स्त्री एक वस्तु मात्र बनकर रह गई है। राज किशोर का उपन्यास तुम्हारा सुख' स्त्री के प्रति पुरुष की सोच को उजागर करता है।

इसी युग में बड़ी संख्या में लेखिकाएं जैसे कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, पदमा सचदेव, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, मृणाल पांडे, चित्रा मुदगल, मैत्रयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, गीतांजलि श्री. मनीषा, जयंती आदि महिला मुद्दो पर अपनी कलम चलाने लगती है। स्त्रियों संबंधी मुद्दो पर बहस होने लगती है। स्त्रियों की समस्याओं पर बहुत सी लेखिकाएं कलम चलाने लगती है। मृणाल पांडे, मृदुला गर्ग, कात्यायनी, अनामिका आदि की स्त्री विषयक पुस्तके काफी चर्चित होती हैं। स्त्री विषयों पर पुरुष लेखक भी लिखते है। अरविंद जैन की पुस्तक 'औरत होने की सजा के आठ संस्करण छपते है। उन्ही की पुस्तक औरतरू अस्तित्व और अस्मिता भी बेहद चर्चित रही।

'स्त्री सशक्तिकरण के जो भी प्रश्न समाज में प्रकट हो रहे हैं. साहित्य उनसे निरपेक्ष नहीं रह सकता। हर काल में स्त्रियों के बलीकरण के प्रश्न बदलते रहे है। आज स्त्रियाँ लिंगभेद, महिलाओं पर हिंसा को रोकना, निजी कानूनों में संशोधन, महिला स्वास्थ्य तथा आर्थिक दशा आदि में मुद्दों से जूझ रही है। स्त्रियों को समाज की अग्रगामी धारा में जोड़ने में महिला आंदोलन ने प्रमुख भूमिका निभाई है। आज साहित्य में भी महिला आंदोलन द्वारा उठाए गए मुद्दे प्रमुखता से उभर रहे है। यह एक अच्छी खबर है। (क्षमा शर्मा, 2012)

फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' तथा 'परती परिकथा' इस युग के प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास है। मैला आँचल की कमली, लक्ष्मी आदि स्त्रियाँ अपनी इच्छा को महत्व देती है।

रांगेय राघव के 'कब तक पुकारूँ की प्यारी और कजरी भी सशक्त स्त्रियाँ है। रामदरश मिश्रा के "बिना दरवाजे का मकान तथा भीष्म साहनी के "बसंती' में महरी का काम करने वाली स्त्रियों की संघर्ष कथा है।

स्त्री विमर्श महिला लेखन के संदर्भ

लेखन के क्षेत्र में स्त्रियों का पदार्पण भले ही बाद में हुआ किन्तु उनकी सृजनशीलता अत्यंत प्राचीन है। जब वे साक्षर नहीं थी, तब मौखिक रूप से उनकी रचनाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी चलती थी। लोकगीत इसका अप्रतिम उदाहरण है।

'लोकगीतों के आदिशोधकर्ता श्री रामनरेश त्रिपाठी ने गहरा अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि स्त्रियों के गीतो में पुरुषो का मिलाया हुआ एक शब्द भी नहीं है। स्त्री-गीतों की सारी कीर्ति स्त्रियों के ही हिस्से की है। यह संभव हो सकता है कि एक-एक गीत की रचना में बीसों वर्ष और सैकड़ों मस्तिष्क लगे हों पर मस्तिष्क थे स्त्रियों के ही, यह निर्विवाद है। (राजेन्द्र यादव, 2001)

आधुनिक हिन्दी साहित्य में पिछले दो-तीन दशकों से स्त्री लेखन में ज्यादा उभार आया है किन्तु यह कड़ी महादेवी वर्मा के लेखन के साथ ही आरंभ हो गयी थी। आज भी जब स्त्री-लेखन में स्त्री जीवन और उसकी समस्याओं से जुड़ी

Received: 05.06.2022 **Accepted:** 24.07.2022 **Published**: 25.07.2022

बातों, स्त्री-पुरुष संबंधो कि तलाश की जाती है तो महादेवी वर्मा कि रचना 'श्रृंखला की कड़ियाँ नामक निबंध संग्रह का उल्लेख करना लाजमी हो जाता है। इन निबंधो में उनके द्वारा व्यक्त विचार वर्तमान स्त्री लेखन को एक रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करते है।

'आज हमारी परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर रहना चाहती है और न ही देवता कि मूर्ति बनकर प्राण-प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गयी है कि एक का अर्थ अन्य कि शोभा बढ़ाना है। तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है, जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे। (महादेवी वर्मा, 2012)

जीवन के हर क्षेत्र की तरह एक लंबे समय तक स्त्री साहित्य लेखन के क्षेत्र से भी अनुपस्थित रही है। पुनर्जागरण तथा स्वतन्त्रता आंदोलन के दौर में यदा-कदा यदि वह नजर भी आई है तो अपनी विशिष्ट पहचान रेखांकित नहीं करा सकी। परंतु पिछले कुछ दशक से लेखन के क्षेत्र में महिलाओं की सशक्त भागीदारी बढ़ी है। स्वातंत्रयोत्तर कालखंड में कई महिला रचनाकारो का समान रूप से योगदान प्राप्त होता है। ऐसे उपन्यास हमें प्राप्त होते हैं, जो मात्र नारी जीवन कि विभिन्न परिस्थितियों को उदघाटित करते है।

प्रभा खेतान लिखती है कि 'ज्यादातर लेखिकाएँ आलोचना की आपाधापी में पीछे छूट गई है। स्त्री की अपनी संस्कृति है, इतिहास में इसे भिन्न माना जाता रहा लेकिन इसे अलग पहचान नहीं दी गई। चूंकि अलग से स्त्री शक्ति कि सत्ता नहीं थी इसलिए सत्ता को अलग पहचान ही नहीं मिली।" (अरविंद जैन, 2001)

कृष्ण सोबती का उपन्यास 'सूरजमुखी अधेरे के बचपन से बलात्कार पर हिन्दी में ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओ में भी शायद पहला और अकेला सशक्त उपन्यास है। यह उपन्यास 1972 में प्रकाशित हुआ था। अरविंद जैन (2001) के अनुसार 'उस समय कम उम्र में बच्चियों से बलात्कार की समस्या से शायद समाज इतना चिंतित और परेशान नहीं था जितना आज है।"

इसी प्रकार ममता कालिया का उपन्यास बेघर 1971 में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास का नायक परमजीत है। जब उसकी प्रेमिका सजीवनी उसके सामने आत्मसमर्पण करती है और परमजीत को पता चलता है कि वह उसके जीवन का पहला पुरुष नहीं है। स्त्री के जीवन में पुरुष पहला होने की धारणा से इतना आक्रांत है कि कई बार पूरे जीवन में यह आशंका सताती है कि कहीं पत्नी या प्रेमिका पहले भी तो किसी से 'विवाह पूर्व देह संबंधो के बारे में अनेक शोध अनुभव बताते है कि पुरुष कुँवारी लड़कियों से विवाह करना ही बेहतर समझते है।

Received: 05.06.2022 **Accepted:** 24.07.2022 **Published**: 25.07.2022

हमारे यहाँ अब तक अधिकांश फिल्में, कहानियाँ, नाटक, उपन्यास सबके द्वारा स्त्री को यही शिक्षा दी जाती है कि यदि अपने पति के लिए तुम 'कुँवारी नहीं हो तो इस जीवन से तो मर जाना ही बेहतर। दरअसल स्त्री का 'कुंवारापन ही वह हथियार है जिससे उसे पूरे जीवन लहूलुहान किया जा सकता है। (क्षमा शर्मा, 2012)

उषा प्रियम्वदा के पचपन खंबे लाल दीवारे, रुकेगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा नामक उपन्यास प्रसिद्ध है।

'पचपन खबे लाल दीवारें कि नायिका सुषमा आत्मनिर्भर है। घर की आर्थिक जरूरतों के कारण विवाह नहीं कर पाती। लेकिन मान और देह की जरूरतों के लिए चोरी-छिपे प्रेम भी करती है।

प्रभा खेतान का पीली आँधी संयुक्त परिवार के बसने उजड़ने और टूटने बिखरने की विकास कथा है।

इस प्रकार पिछले कुछ दशको से महिला लेखन के क्षेत्र में बेहद तीव्रता आई है। मैत्रेयी पुष्पा के 'इन्गम', 'चाक', 'अल्मा कबूतरी', नासिरा शर्मा का 'शाल्मली, मंजुल भगत का 'अनारो', मृदुला गर्ग का 'उसके हिस्से की धूप. 'वंशज', 'चित्तकोबरा', 'कठगुलाब, मैं और मैं, मन्नू भण्डारी का 'आपका बँटी, 'एक इच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ), कृष्ण सोबती का 'जिंदगीनामा', 'डार से बिछुड़ी, मित्रो-मरजानी, रानी सेठ का 'तत्सम, गीतांजलि श्री का 'माई, क्षमा शर्मा का परछाई, 'अन्नपूर्णा, 'स्त्री का समय, अल्का सरावगी का 'शेष कादंबरी, 'कली कथा वाया बायपास, अनामिका का 'दस द्वारे का पिंजरा', 'तिनका तिनके पास, ऐसे अनेकों उपन्यास महिलाओं द्वारा लिखे गए है जिनमे स्त्री समस्याओं का स्वर मुखरित होता है।

स्पष्ट है कि महिला उपन्यासकारों द्वारा किया जाने वाला स्त्रीविर्मश नारी मुक्ति की अवधारणा को देह मुक्ति से जोड़कर देख रहा है लेकिन इस देह मुक्ति का पर्याय बना देना उचित नहीं है। यह मुक्ति का एक आयाम हो सकता है। एक मात्र आयाम नही। इसका प्रमाण स्त्रीवादी लेखन के आयाम में आने वाले हाल के बदलाव है जहां स्त्री के स्वत्व व अस्तित्व के प्रश्न को व्यापक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा जा रहा है।

Received: 05.06.2022 **Accepted:** 24.07.2022 **Published**: 25.07.2022

संदर्भ ग्रंथ सूची

- निवेदिता मेनन, साधना आर्य, जिनी लोकनीता (संपादित), नारीवादी राजनीतिरू संघर्ष एवं मुद्दे हिन्दी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2013
- अरविंद जैन, औरत अस्तित्व और अस्मिता, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली. 2013
- रेखा कस्तवार स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
- क्षमा शर्मा, स्त्रीत्ववादी विमशरू समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
- राजेन्द्र यादव (सपा०), अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011
- वी० एन० सिंह, जनमेजय सिंह, आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2010
- डॉ० वैशाली देशपांडे, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007
- अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, साराश प्रकाशन, दिल्ली, 1999
- नीरा देसाई, ऊषा ठक्कर, भारतीय समाज में महिलाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 2011
- डॉ० प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्द पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2008
- कृष्ण कुमार, चूड़ी बाजार में लड़की, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2014
- रमणिका गुप्ता, स्त्री मुक्तिरू संघर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
- कल्पना वर्मा (सपा०), स्त्री विमर्श विविध पहलू, लोकभरती पुस्तक विक्रेता तथा वितरक, 2009
- जगदीश्वर चतुर्वेदी, सुधा सिंह (सपा०), स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, 2004
- सुधीश पचौरी, उत्तर आधुनिक दौर में साहित्य, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली
- डॉ० विनय कुमार पाठक, स्त्री विमशरू पुरुष रचनधर्मिता के विशेष संदर्भ में, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2009
- महादेवी वर्मा, श्रृंखाला की कड़ियाँ, लोकभारती पेपरबैक्स, इलाहाबाद, 2012
- मैत्रेयी पुष्पा, चर्चा हमारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
- रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय (सपा०), स्त्री सशक्तिकरण की राजनीति, शब्दसंधान प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
- भारत का संविधान, भारत सरकार विधि और न्याय मंत्रालय विधायी विभाग. 2011